

पाठ-१

णमोकार महामंत्र



प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



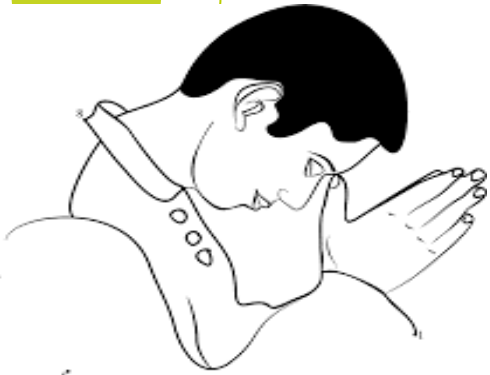
99260-40137

णमो अरहंताणं,
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्व साहूणं ॥



अर्थ

- * लोक में सब.....
- * अरहंतों को नमस्कार हो,
- * सिद्धों को नमस्कार हो,
- * आचार्यों को नमस्कार हो,
- * उपाध्यायों को नमस्कार हो और
- * साधुओं को नमस्कार हो ।



अरहंत और सिद्ध भगवान है

अरहंत



शरीर
सहित
भगवान हैं

सिद्ध



शरीर
रहित
भगवान हैं

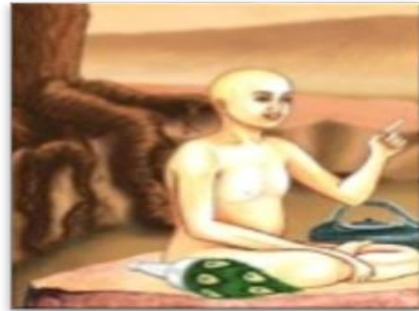
आचार्य, उपाध्याय और साधु गुरु हैं

आचार्य



मुनियों के
नेता,
मुखिया,
संचालक हैं

उपाध्याय



मुनियों
को पढ़ाने
वाले हैं

साधु



सामान्य
से सभी
मुनि हैं



- * मंदिर जी में प्रतिमा किसकी है?
- * बड़े कौन हैं? अरहंत या सिद्ध?
- * फिर अरहंत को पहले नमस्कार क्यों किया गया है?
- * हमें क्या बनना है?
- * सिद्ध बनने से पहले क्या बनते हैं ?
- * किस क्रम से सिद्ध पद प्राप्त होता है ?

इस मंत्र की रचना कब हुई

* मंत्र का भाव अनादि का है

* किसी ने नहीं रचा

* इन शब्दों में प्रथम बार लिपिबद्ध षट्खण्डागम
ग्रंथ में किया गया है



महिमा

- * कुछ माँगा नहीं गया है
- * किसी व्यक्ति विशेष को नमस्कार नहीं किया गया है -
गुणों को नमस्कार किया है।

एसो पंच णमोयारो
सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं होहि मंगलम् ॥

- * यह पंच नमस्कार मंत्र
- * सब पापों का नाश करने वाला है तथा
 - * सब मंगलों में
 - * पहला मंगल हैं ।

मंगल किसे कहते हैं?

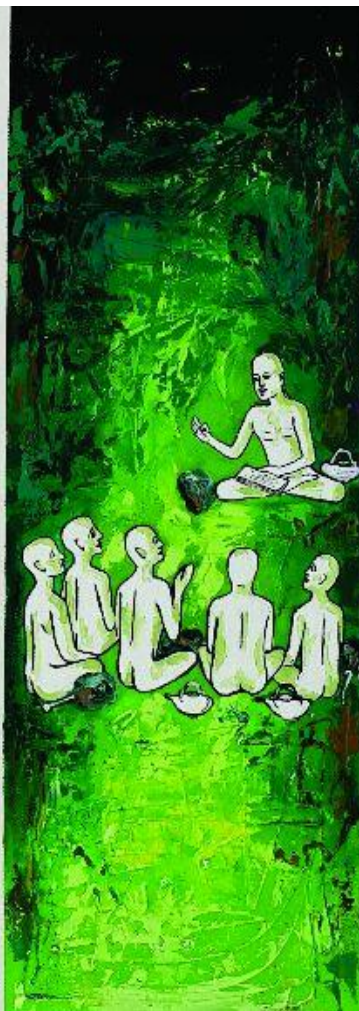
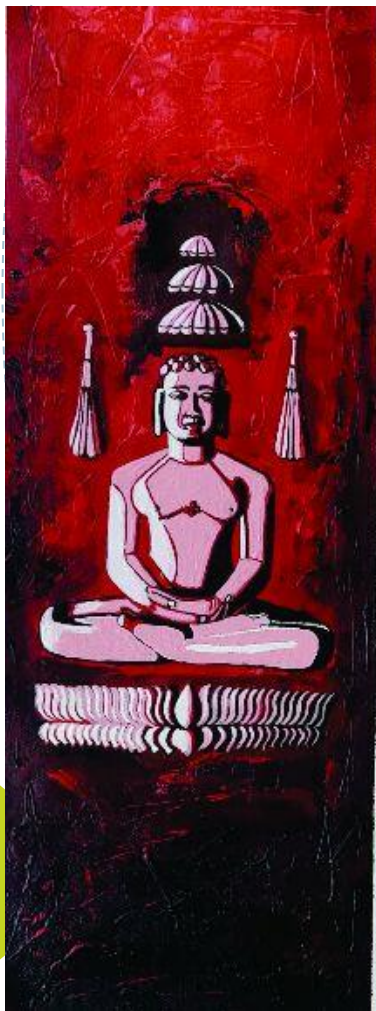
* मं + गल =

पाप + गलावे = पापों को गलावे

* मंग + ल =

सुख + लावे = सुख प्राप्त करावे

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु
ये पाँच होने से पंच परमेष्ठी कहे जाते हैं



परमेष्ठी किसे कहते हैं?



* जो परम पद में स्थित हों

* जो परम अर्थात् सबसे ज्यादा इष्ट अर्थात् प्यारा हो

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

ओम् में भी पंच परमेष्ठी गर्भित हैं

अ = अरहंत

अ = अशरीरी

आ = आचार्य

उ = उपाध्याय

म = मुनि

अ + अ = आ

आ + आ = आ

आ + उ = ओ

ओ + म् = ओम्



पंच परमेष्ठी को नमस्कार
करने से क्या लाभ है?



सच्चे सुख
की प्राप्ति
होती है



सच्चे सुख की प्राप्ति कैसे होती है?

- * इन पाँचों परमेष्ठियों को पहचान कर
- * उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर ।